लाट साहेब

किंमत १० पैसे

इन्टरनेशनल फ्लन्टग्राफ्स ने

लाट साहब

कथासार

×

जिंदगी की सबसे बडी सच्चाई का नाम है मौत। जिस तरह हर दिन के बाद रात और हर सुबह के बाद शाम जरुर होती ह इसी तरह मौत हर जिंदगी का अंज म जरुर होती है। हमारी कहानी भी जिंदगी और मौत की एक एसी तकरार है जिसमे ममता की मिठास के साथ साथ मोहब्बत के कडवे घूट भी शामिल है

हरी भरी वादियों का दामन में जहां सूरज की पहलीकिरण सान में ढलके आती है, एक सुबह एसी आई जो किसीकी मौत का पैगाम था और एक शाम एसी भी जो जिंदगी का आगाज है।

जिंदगी और मोतके दोराहे पर खडा वह जंगू जो बहादुर भी था और सच्चा भी। वह जंगू जो नेक भी था और निडर भी वह जंगू जो मेहनती भी था ओर मुंह-फट भी और इसीलिये सारा गांव उसे लाट-साहब कहकर पुकारता था वह नहीं जानता था की उसका जिंदगी के नव्वे दिन था इनके फौरन बाद आनेवाली पूरणमाशी उसकी जिंदगी का, आखरी दिन होगी॥

आगे परदे पर देखिए

इंटरनेशनल इंटर प्राइज

डायरेक्टर--हरी वालिया + म्यू.--शंकर जयकिशन

कलाकार--शम्मी कपूर, नूतन, प्रेम चोपडा राजेद्रनाथ ललितापवर

गाने--हसरत, शैलेद्र

लाट साहब के गाने

१

जंगू---जाने मेरा दिल किसे ढूंढ रहा है
इन हरी भरी वादियों मे
कभी न कभी टकरायेगा दिल से
इन ही वादियोंमें
ये किसीकी लगन मंजिल मंजिल
हर रोज मुझे दे जाती है
ये किसीकी तमन्ना सीने में जो आसका दीप जलाती है
जाने मेरा दिल किसे...
झरनोंमें नहाती जल परिया क्यो जाने मुझे ललचाती
जंगल की कंवारी कलियां भी हंस २ के कयामत ढाती
जाने मेरा दिल किसे ढूंढ...
जब देखे बिना मदहोस हूं मै
देखूगा उसे तो क्या हो...
क्या नूर भरी सूरत होगी क्या प्यार भरा जलवा होगा
जाने मेरा दिल किसे ढूंढ...

२

जंगू--दिल लेगई लेगई इक चुलबुली चुलबुली नाजनीन
मुखडा है ऐसा जैसा उस जालिम का
हुस्न भरा है सारे आलम का
दिल लेगई लेगई.....
उसके काजल बिना नयन काले
और काजल लगाले तो क्या हो
उसके हाथों में सुरखी चमन की
और मेहेदी लगाले तो क्या हो
दिल लेगई लेगई लेगई.....
जितना गुस्सा करे वो हसीना और लिखरे है उसकी जवानी
रंग आता है गोरे बदनपर जैसे चांदी पे सोने का पानी
दिल लेगई लेगई लेगई...
कितना नाजुक है वो छुई मुई अपने आंचल से
खुद दब रही है
एक चंपा मदहोश की डाली
अपने फूलों से खुद झुक रही हैं
दिल लेगई लेगई लेगई.....

३

जंगू--सवेरे वाली गाडी से चले जाएगे

कुछ लेके जाएगे कुछ देके जाएगे
सवेरे वाली गाडी....
ये मेला दो घडी दो दिनों की बहार
समय की बहती धार कहती जाती है पुकार
मेहमान कब रुके है कैसे रोके जाएगे कुछ लेके जाएगे
कुछ देके जाएगे सवेरे वाली गाडी....
लडकियां--सवेरे वाली गाडी...
जंगू--मिलो तो दिलो प्यारसे बोलो तो मीठी बात
हमारे बडे भाग्य हुई तुमसे मुलाकात
मिलेगा कुछ तो दिल जो यहां
खोके जाएगे कुछ लेके जाएगे
कुछ देके जाएगे, सवेरे वाली गाडी...
लडकियां--सवेरे वाली गाडी....
जंगू--निशानी कोई प्यार की तो छोड जाएगे
कहानी कोई प्यार की तो जोड जाएगे
बनेंगे किसीके किसीके होके जाएगे, कुछ लेके जाएगे
कुछ देके जाएगे सवेरे वाली गाडी....
लडकियां--सवेरे वाली गाडी से चले जाएगे
जंगू--सवेरे वाली गाडी....

४

निक्की--मुझे जबसे मोहब्बत होगई बस एक मुसीबत होगई

दिल कहता है अब मुझसे प्रीतम की जरुरत होगई
मुझे जबसे मुहब्बत होगई...
मुझे प्यार नें ऐसा लूटा इक तीर जिगर पे टूटा
बस एक मोहब्बत सच्ची बेदर्द जमाना झूटा
ये कैसी हालत होगई
मुझे जबसे मुहब्बत होगई
इक आगसी दिलमें भडके दिल जोर से धडके
मुझे छू ले सर्द हवाए मेरा रोम रोम भडके
ये कैसी हालत होगई
मुझे जबसे मोहब्बत होगई
न उठते चैन मिले है न बैठे चैन मिले है
जब चांद खिले पूनम मेरे दिलके जख्म छीले है
ये कैसी कयामत होगई
मुझे जबसे मोहब्बत होगई

५

निक्की—ऐ चांद जरा छुप जाए वक्त जरा रुक जा
इक बात है होटोपे कहलूं तो करार आए
इक बोझ तो हट जाए...
जंगू—ऐ चांद जरा छुप जाए वक्त जरा रुक जा
रुख बनके इधरको है अब कियों न बहार आए
दुनियां न बदल जाए ऐ चांद जरा छुप जा

निक्की-सब ख्वाब सा लगता है इस रात में जादू है
खामोश नजरो की हर बात में जादू है
हम है कि बन्देसे है दिल है की उडा जाए
इक बात है होटोंपे कहलू तो करार आए
इक बोझ तो हट जाए ऐ चांद जरा छुप जाए
जंगू-मै प्यार की बाजी में दिल हारा तो क्या हारा
पहलूं में मेरी दुनियां बाहोंमें जहां सारा
क्या देगा मुकद्दर अब हम मांग के पछताए
इक बात होटोपे कहलूं तो करार आए
इक बोझ तो हट ज ए
निक्की-ऐ चांद जरा छुम जा ऐ वक्त जरा रूक जा
इक बात है होटोपे कहलूं तो करार आए
इक बोझ तो हट जाए
जंगू—ऐ चांद जरा छुप जा...
निक्की-ऐ चांद जरा छुप जा...
दोनो—ए चांद जरा छूप जा

६

निक्की—तन में अग्नी मन में चुभन
कांप उठा मेरा भीगा बदन
ओ रब्बा खैर ओ रब्बा खैर ओ रब्बा खैर खैर खैर ३
ओ रब्बा खैर...

ओ रब्बा खैर...

जंगू-उजला मुख जैसे दर्पनं काली लट जैसे नागिन
ओ रब्बा खैर ओ रब्बा खैर ओ रब्बा खैर ओ रब्बा खैर
ओ रब्बा खैर...

निक्की-कोई लहर जब तन को छूले
बीच भवर मोरी काया झूले
बात जिगर पर मारे पवन थामके दिल रह जाऊं सजन
ओ रब्बा खैर...

जंगू-फूलसे निखरे तेरी जवानी शोला बनगया ठंडा पानी
ओ रब्बा खैर...

निक्की-सोच न तू बाहोंमे लेले इश्क वही जो आग से खेले
चांद से उतरी चंद्र किरण कौन बुझाए मनकी तपन
आज हुआ दो दिल का मिलन
आज मिला धरती से गगन
ओ रब्बा खैर...

जंगू-ओ रब्बा खैर...

प्रकाशक-एफ. बी. बुरहानपुरवाला, सेंट्रल प्रकाशन,
पावबाला स्ट्रीट, कृष्णासिनेमा न्यू चार्निरोड मुं. ४
मुद्रक : सज्जाद हुसेन कुर्बान हुसेन,
बाकिर प्रिंटिंग प्रेस, मुझफराबाद हॉल, ग्रांटरोड मुं. ७